International Journal of Applied Research 2017; 3(12): 418-421

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(12): 418-421
www.allresearchjournal.com
Received: 09-10-2017
Accepted: 12-11-2017

डॉ. सुमन तिवारी
पी–एच.डी. (इतिहास) – अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.), भारत

Correspondence
डॉ. सुमन तिवारी
पी–एच.डी. (इतिहास) – अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.), भारत

बघेलखण्ड के सेंगरों का सामाजिक–धर्मिक गतिविधियाँ

डॉ. सुमन तिवारी

सारांश
संस्कृति व्यक्तिचेतना की सम्यक क्रियाशीलता का सामाजिक रूप है। व्यक्ति चेतना ही समाज द्वारा स्वीकृत होकर समाज चेतना बन जाती है और लोक संस्कृति तथा लोककला को रूप देती है। बघेलखण्ड लोक जीवन और लोक संस्कृति के आधिस्ठान के अन्तर्गत ही सेंगरान की आंचलिक कला और संस्कृति आती है। यहाँ की लोकवाचिक (लोक कला) परम्परा के समस्त पक्षो आस्थाओ, विश्वासो, रीति रिवाजो, पर्वो, उत्सवो, दैनन्दिन और नैमितक अनुष्ठानो खान–पान, रहन–सहन, हास–परिहास, गीत–संगीत मानवीय संवेदनाओं के कारण संरक्षित है। संस्कृति इस राज्य के इतिहास जानने में सहायक तत्व रही।
धर्मदर्शन हमारी संस्कृत का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो प्राचीन काल से हमारी सभ्यता से जुडा हैं। सेंगर राज्य एक हिन्दू शासित क्षेत्र हैं जहॉ हमेशा ही हिन्दू राजाओ का अधिपव्य था अतः इस राज्य में अन्य धर्मावलम्बी शासको को सेंगरो ने प्रवेश नही करने दिया "कहा जाता हैं की एक अंग्रेज ने प्रवेश किये ये कोई चढ़ाई नही थी और न इससे पहले कभी अंग्रेज नईगढ़ी में प्रवेश किये थे बल्की रीवा वाले उनको नईगढ़ी दिखाने लाए थे। जब छत्रधारी सिंह को यहां अंग्रेजो के प्रवेश की सूचना मिली इससे नाराज होकर वह प्रायग में थे वहां से बनारस चले गये। उन्होने कहा –'हम नईगढ़ी न जायेगे न ही वहॉ का पानी पियेगे हमारी गढी को बेधर्मी कचर दिये है' जब उन्हे समझा–बुझा कर बुलाया गया वे धेनमहा (कोर्ट के) पास उपवास किये उनके साथ उनकी प्राजा भी उपवास में वैठी रही और तीन रोज तक पानी नही पिया बहुत समझाने बुझाने पर गढ़ी को धुलवाकर गंगा जल से पवित्र किया गया तब गढ़ी परिसर में बने राम जानकी मंदिर में छत्रधारी ने उपवास तोड़ा।

Keywords: बघेलखण्ड, सेंगर, नईगढ़ी, सामाजिक–धार्मिक, वर्णव्यवस्था एवं रीति–रिवाज।

प्रस्तावना
सेंगरो की मूल स्थान क्या था यह सेंगरो द्वारा नही जाना जाता है यमुना के आस–पास कन्नौज से थोडी दूर पर जालौन में इनकी हलचल साबित करती है कि सेंगरो का मूल स्थान जलौन का जगमनपुर रहा होगा कनिंघ ने लिखा है जगमनपुर के सेंगर ठाकुर टाइब राजपूत थी जगमनपुर से ब्रजमण्डल के क्षेत्र इटावा फफूद से लेकर बघेलखण्ड मक फैल गए। सेंगरो का प्रथम राजनीतिक प्रकाश पूर्व मध्यकाल में मिलता है। कनिघंम ने .....सेंगरो को पृथ्वीराज के विष्वस्त सैनिक मित्र माना है अतः हम कह सकते है कि 11वीं शताब्दी के पूर्व ही सेंगरो में निर्मित राजनीतिक विखण्डता के कारण अपनी शक्ति का विस्तार बधेलखण्ड के ब्रजमण्डल से बघेलखण्ड तक कर चुके थे।
सेंगर क्षेत्र की अधिकांश जनता शैव धर्म की उपासक थी। इस क्षेत्र में शिवलिंग के अनेक मंदिर बनबाए गए थे। शिवराजपुर का शिव मंदिर (भुलनहवा), पहाड़ी के शिव मंदिर आदि सेंगर महत्वपूर्ण है। देवतलाब के शिव पार्वती की पूजा का विशेष महत्व था। सेंगर ठाकुर व उनकी प्रजा में बजरंगवली की पूजा का प्रचलन था। जगतबहादुर व गोपालशरण के ईष्टदेव हनुमान जी थे। हनुमान जी की अनेक मुर्तियॉ गॉव–गॉव में स्थापित की गई थी कही मंदिर तो कही–कही वृक्ष, ज्यादातर पीपल के वृक्ष के नीचे चबूतरो मे स्थापित की गई थी। हनुमान जी के मंदिरो मे महावीरपुर, देवरी सेंगरान, भगतिनिया के प्रसिद्ध है।
सेंगर किले के प्रांगण मे राम जानकी का मंदिर बनबाया गाया था। ऐसा मंदिर नईगढ़ी व मऊ की दोनो गढ़ियो मे है जबकि प्रजा के बीच इस तरह के कोई मंदिर नही था। संभवतः इसका किले के प्रांगण में स्थापना का उद्देश्य राजा द्वारा राम के कर्तव्यों व मर्यादायों का अनुसरण के लिए रहा हो।
सेंगर क्षेत्र में अनेक देवी देवताओ की भी पूजा–उपासना की जाती थी जैसे. सूर्य, गणेश, अग्नि, लक्ष्मी, सरस्वती, काली, दुर्गा विष्णु आदि। इसके साथ ही साथ कुल देवी–देवता को घर मे व गॉव के बाहर स्थापित किया जाता था जिनकी पूजा किसी शुभ कार्य के प्रारंभ मे की जाती थी। इन देवी देवताओ की मूर्ति व प्रतीक आज भी गांवो में हैं नईगढ़ी के अन्दर काली मॉ का स्थान, मऊ0 की गढ़ी मे देवी की अनेक शिलामूर्ति उत्कीण है। इस क्षेत्र में नदी स्नान का भी धार्मिक महत्व था। गंगा नदी में एक–एक माह का कल्पवास किया जाता था। अनिरूद्ध सिंह के प्रयाग कल्पवास पर ही

बघेलो ने मऊ पर आक्रमण किया था। खिचड़ी के मेले मकरसंकाति, विशेष पर्वो, सूर्य व चन्द्रग्रहण के समय सोन व गंगा नदी में स्नान करने की भी आस्था थी। सेंगरवासी तीर्थयात्रा के लिये भारत के अन्यत्र स्थानो मे दूर–दूर तक पैदल जाया करते थे। ऐसे अनेक बाकया भगवान की आस्था के सुनने को मिलते है। सलैया के एक ब्राम्हण की तीन कन्याए थी पुत्र की कामना से बद्रीनाथ गये थे वहॉ से आने पर उनकी इच्छा पूर्ण हुई और पुत्र का जन्म हुआ। ठाकुर गोपालशरण का जन्म गोपाल यज्ञ के फलस्वरूप हुआ। [1] यहॉ धार्मिक ग्रन्थ रामायण, महाभारत, पुराण लोगो को मुहजवानी याद था। हर मंगल को रामायण की चौपाई का पाठ मंदिरो में होता था। किसी बडे प्रयोजन मे मानस का पाठ होता था। ग्रहो व वृक्षो की पूजा चलित थी जैसे बट, नीम की, पीपल पर सनी देव की, रविवार को सूर्य की। यहा अनेक देवी–देवताओ की पूजा की जाती थी अर्थात बहुदेववाद का प्रचलन था।

वर्णव्यवस्था :– सेंगर राज्य की जाति व वर्ण व्यवस्था अन्य भारतीय राज्य की तरह ही पराम्परागत संरचना पर आधारित थी। समाज ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य व सूद्र वर्णो में बंटा था। इसमे ब्राम्हण व क्षत्रिय को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। ब्राम्हणो को सर्वोच्च स्थान के साथ ही विशेषाधिकार था। उन्हे या तो कर मुक्ति भूमि दी जाती थी या तुलनात्मक कम कर लागया जाता था। वह समाज में सर्वत्र पूज्य था। समाज मे विविध संस्कारो का प्रचलन था जो ब्राम्हणो द्वारा सम्पन्न कराये जाते थे। शिक्षा का कार्य भी ब्राम्हण ही कराते थे। यहा के हर ग्राम में ब्राम्हणो की संख्या अन्य वर्णो से ज्यादा थी। [2] समाज में दूसरा स्थान तथाकथित क्षत्रियों का था जो राज्य व शासन का कार्य करते थे। क्षत्रियों में ज्यादतर सेंगर कुल थे, एक दो घर बघेलो, गहरवारो व चन्देलों के है लेकिन इनकी बडी जागीर नही थी।

तीसरा स्थान वैष्यों का था इनकी संख्या सेंगर क्षेत्र मे कम ही थी जो ज्यादातर किले के पास या बाजार हाटो में थे। इनका पेशा व्यापार करना था ये भूमिहीन होते थे।सिर्फ इनके आवास इस क्षेत्र में मिलते हैं। अतः इनका पैत्रिक स्थान कही अन्यत्र जान पडता हैं। ये कृषि कार्य में रूचि नही रखते थे। सेंगर क्षेत्र में कुनवी जो पटेल कहलाते हैं एक जाति थी जिनका पेशा कृषि कार्य था और इनके पास पर्याप्त जमीन भी थी।

समाज मे चौथा स्थान निम्न वर्णी जातियो का था जिन्हे सूद्र कहा जाता हैं। इस वर्ण में अन्त्यज्ञ जातियॉ भी समलित थी। यहां इस वर्ग की अनेक जातियॉ जैसे चमार, कोल, डोमार, बसुहार, तेली, गोड, बैगा, पनिका, बेसबार, भूर्तिया, अगरिया, बसोर आदि थी। [3] इन सूद्र वर्णी जातियों का समाज से बाहर गॉव के किनारे बस्ती रहती थी। इनकी वस्ती आज भी हर गॉवो के किनारे है लेकिन बारी, कहार, केवट जिन्हे गढ़ी के आस पास बसाया जाता था घरेलू कार्य करते थे अर्थात सेवक व नौकर थे।

रीति रिवाज (पराम्परा) :– सेंगरो राज्य की संस्कृति पराम्परागत थी। यहॉ की रीति–रिवाज में क्षेत्र व परिस्थिती का प्रभाव परिलक्षित होता हैं। विवेच्च क्षेत्र के समाज में जन्म, मृत्यु, विवाह के संबंधित कई संस्कार प्रचलित थे। बहुविवाह को सामाजिक मान्यता थी। सेंगर ठाकुर व उनकी प्रजा में बहुविवाह सामान्य सी बात थी। प्रजा में ज्यादातर बहुविवाह पहली पत्नी के पुत्र न होने, संतान न होने या मर जाने के बाद ही होती थी। विवाह परिवार की इच्छा से किया जाता था। बालविवाह पूर्णतः प्रचलन मे था। कुछ लडकियो का विवाह इतनी कम उम्र मे किया जाता था कि उन्हे याद भी नही होता था। विवाह के 5 व 7 वर्ष वाद बहू गौवना के बाद ससुराल जाती थी। स्त्रियों में पुनःविवाह या विधवा विवाह ब्राम्हण व क्षत्रियों मे पूर्णतः प्रतिबंधित था। एक दो अपवाद मामले आए है जिन्हे समाज से अलग कर दिया जाता था लेकिन सूदो व वैश्यो मे यह प्रथा प्रचलित थी। इसके लिये वह अपने ज्यादातर घर मे ही देवर या जेष्ठ के यहॉ रह जाती थी उन्हे एक मुट्टी गेंहू एवं गले मे काले धागे की कंण्ठी बाध कर पत्नी बन दी जाती थी। [4]

वस्त्र :– समाज के लोगो का रहन सहन उनकी आर्थिक स्थित पर निर्भर था। इस क्षेत्र की जंगली जातियां बडी ही विपन्न थी। वे मान लगोटी पहनते थे उनके बच्चे तो नंगे घूमते रहते थे। इस क्षेत्र के सम्पन्न लोग धोती कुर्ता पहनते थे और मस्तक पर मुरैठा बाधते थे। लड़किया ब्लाउज एवं नीचे लहगा या सिर्फ धोती और शर्ट पहनती थी औरते बारह हाथ की साड़ी जिसमे कच्छे जैसे बाधकर पहनती थी जिन्हे ब्लाउज व साया की जरूरत नही पड़ती थी। ब्लाउज कभी तीज त्यौहार सादी व्याह में पहना जाता था।

गहने– यहां के स्त्रियां या पुरुष गहने के सौकीन थे। समाज मे अपनी आर्थिक स्थिती के अनुसार लोग सोने व चॉदी के गहने पहनते थे। गरीब लोग लाख या ताबे के गहने पहनते थे। आर्थिक स्थित अनुसार यें औरते नख से सिख तक गहने धारण करती थी। पॉव मे ढेलिया तीन तीन उगलियो में, छड़ा गोड़रहा पहनती थी हाथ में बहुटा, छन्नी, नोगिरही, कमर में करधनी गले में सोने–चांदी की मोहरे या काले धागे मे गूँथ कर पहना जाता था। [5] कानो में बडे–बडे झूमक या फूंल चॉदी का या सोने का पहने जाते थे। चॉदी के न होने पर तावे या लाख के गहने पहने जाते थे। इस क्षेत्र में गहनो की बहुत लोक प्रियता थी थोड़ी बहुत स्थिति भी सही होने पर गहने अवष्य होते थे लेकिन निम्न वर्ण के पास यह न के बराबर होते थे।

स्त्रियो की स्थित– समाज मे स्त्रियो की स्थिति द्वि–अर्थी थी एक ओर वो घर व बाहर पुरूषो के साथ–साथ काम करती थी खेतो पर मजदूरी करने जाती थी दूसरी ओर घर के अन्दर उनकी स्थित शोचनिय थी। वह पूरूषो की पराधीन थी। उच्चघराने की स्त्रियाँ घर के अन्दर पर्दो में रहती थी उनकी स्थित कुछ ठीक कही जा सकती हैं वही तथाकथित निम्नवर्गी स्त्रियां पर्दो से कभी नही थी।

यहाँ कुछ पराम्पराएँ जो प्रचीन काल से चली आ रही थी जिसका पालन करना हर एक स्त्री का कर्तव्य था जैसे पर्दा प्रथा, बालविवाह, सती प्रथा। यहां सती प्रथा के सिर्फ एक दो साक्ष्य मिलते है जैसे गंगेव से तीन किलोमीटर तेदुआ में रोड के बाए दिशा में सती चौरा स्थित है परन्तु यह निष्चयपूर्वक नही कहा जा सकता कि यह सेंगर कालीन है या उससे पूर्व की घटना है। इसी पकार एक चौरा करहे–पहारी गावं में मिला हैं। [6]

जो भी हो एक बात स्पष्ट है यहां यह पथा ज्यादा नही था। स्त्रियो को शिक्षा पाने का अधिकार था लेकिन इसे कोई महत्व नही दिया जाता था। स्कूल की व्यवस्था न होने पर वह घर पर ही रहती थी उन्हे घर का कार्य करना होता था बाल उम्र मे विवाह होने पर पिता के यहा भी शिक्षा नही हो पाती थी और विवाह के उपरान्त तो यह नामुंकिन थी क्योकि ऐसा कोई उदा0 नही मिलता कि विवाह के बाद घर गृहस्ती छोड़ कर शिक्षा दी गई हो। उच्च घराने की स्त्रियो को घर में ही पंडित जी द्वारा पढाने की व्यवस्था थी। महिलाए बाजार करने या तीर्थ यात्रा में पुरूषो के साथ जाया करती थी। उच्च घराने की स्त्रियां का पर्दा प्रथा के कारण न घर से बाहर निकलना होता था अगर कही बाहर जाती तो पालकी मे पर्दा से जाया करती थी।

बालिका का जन्म अच्छा नही माना जाता था उनके जन्म पर न कोई समारोह था न उत्सव न संस्कार होता था। पुत्र की कामना की जाती थी जब तक पूत्र न हो उसका इन्तजार किया जाता

त्यौहार :– यहाँ अन्य पड़ोसी राज्य में होने वाले त्यौहार ही मनाया जाता है इसके अलावा भी कुछ लोक त्यौहार रखे जाते थे। छठ जो पुत्र के लिये माताये रखती थी जिसमें महुए की पूजा

होती है बहुलाचौथ बहनो द्वारा अपने भाई के लिए रखती थी। तीज सुहागन स्त्रिया अपने पति के लिये विना अन्य जल के 24 घण्टे ब्रत रखती थी। नाग पंचमी को मेंला प्रायाका लगता था कुस्तीयां होती थी। इसे ठाकुरो द्वारा प्रोत्साहन भी दिया जाता था। ठाकुर गोपालशरण सिंह अपने हाथो से पुरस्कार वितरण करते थे। सावन में झूले का महत्व था पुरे गॉव मे झूले पड़ते थे पुरूष वर्ग औरतो को झुलाते थे। रक्षाबंधन के दूसरे दिन "कचुलइया" होती थी जिसमे जवा क पौधे को नदी तलाब मे विसर्जित कर एक दूसरे को देकर गले मिला जाता था व आगे भी ऐसे रहने की सुभकामना की जाती थी। ये सभी त्यौहार यहा की प्रजा के आस्था के साथ नवीन शक्ति का संचार करते थे।

लोक कला – इसमे सन्देह नही कि किसी काल की संस्कृति समग्र रूप से सिमट कर कला में उतरती हैं। कला उस काल की सांस्कृतिक धरोहर है जो सदियो तक अपनी अमिट छाप बनाये रखती हैं। विवेच्च क्षेत्र में राजा व प्रजा दोनो ही कला प्रेमी थे तथा कला को पल्लवित करने में योगदान दिया। वास्तविक रूप में सेंगर राज्य की कला लोककला के विविध रूपो में मुखरित हुई। इसका विकास लोक उपयोग की दृष्टि से हुआ, यही कारण है कि यहां की लोक कला में जन जीवन एवं उनकी अभिरूचि देखने को मिलती हैं। यहां के निपुण लोक कलाकारा में बढई, लुहार, सुनार, जुलाहे आदि की कलाऍं स्मरणीय हैं। इन कलाकारो का प्रशिक्षण उनके घर में ही पराम्परागत स्वरूप से होता था।घर के वृद्धजन ही इनके शिक्षक होते थे। यहॉ के कला की सबसे बड़ी विशेषता स्थानीय आधार सामग्री का प्रयोग था।[78] इसके प्रयोग द्वारा क्षेत्रीय कला को परिष्कति करने में सहायता मिली है। हमने इस क्षेत्र की कला का अध्ययन निम्न बिन्दुओ के आधार पर किया हैं– 1 स्थापत्यकाल 2 चित्रकला 3 लोक कला

स्थापत्य कला :– सेंगर राज्य पर लिखित ऐतिहासिक स्त्रोत की कमी में स्थापत्य कला उनका इतिहास जानने का सबसे शसक्त माध्यम है। वास्तुषिल्प से न केवल तात्कालीन आर्थिक व सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी मिलती है बल्कि उस युग की धर्मिक व सामाजिक इतिहास पर भी प्रकाष पड़ता है। हमने अपने अध्ययन में सेंगर क्षेत्र के स्थापत्य कला सें सम्बन्धित कुछ स्थानो का भ्रमण किया जैसे नईगढ़ी का किला, मऊ की गढ़ी, गंगेव की गढ़ी, शिवराजपुर का भूलनहा मंदिर, जिनका सेंगरों के इतिहास में महत्वपूर्ण हैं।

नईगढी का स्थापत्य :– सेंगर ठाकुरो द्वारा बनबाई गई नईगढ़ी का किला, मंदिर व भवन स्थापत्य की दृष्टि से विशेष महत्व के हैं। नईगढी के स्थापत्यो में से अभी ज्यादातर सुरक्षित खडे है।

बरादरी (गढी का द्वार) :– यह गढी का प्रवेश द्वार है जिसे बरादरी कहते है इसे हाथी दरवाजा भी कहा जाता है। क्योंकी इसकी उॅचाई व चौडाई ज्यादा है। बरादरी एक दो मंजिला भवन है जिसमे मुख्य प्रवेश द्वार अत्यन्त कलात्मक ढंग से बनाया गया है द्वार की मेहराब लता बल्लरी अलंकरणयुक्त है द्वार के ऊपरी भाग में तोडो पर आधारित हिन्डोतानुमा झरोखा बना हुआ है। झरोखे के सम्मुख भाग में अलंकृत स्तम्भो से द्वार बने हुए है। झरोखे की छत मजुपृष्ठाकृत है।

नाट्यशाला या (रंगमहल) गढी के अन्दर एक अत्यन्त अलेकृत दो मंजिला भवन है जो नृत्य शाला का रंग महल के नाम से जाना जाता है। यह भवन अपनी कलात्मक जालियो अलंकृत स्तम्भो एवं छज्यो के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण है इसकी छत अलललंकृत की गई है भवन के निर्माण में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है। भवन मे लगे हुए पत्थरो पर खुदाई का कार्य अत्यन्त कलात्मक भवन की सुन्दरता बढाने के लिये मोर कवूतर व मछलियो की नक्काशी पत्थरों पर की गई है।

मंदिर समूह :– गढी के अहाते के अन्दर अनेक मंदिर बने है। यद्यपि ये मंदिर पूर्णतः सादा है किन्तु क्षेत्रिय स्थापत्य की दृष्टि से दसका विशिष्ट महत्व है। काली मॉ का मंदिर किले के अंदर ही बने मुख्य भवन मे किनारे की ओर स्थित है यह पूर्ण सादा है इसे गुफा का रूप दिया गया है किसी तरफ कोइई खिडकी नही अन्धकार युक्त स्थान है। इसको यह आकार देने का आष्य भवन मे पूजा की एकान्तता रही होगी। इसी प्रकार गढ़ी के अन्थिदर प्रमुख मंदिर राम जानकी का है इसका निर्माण छत्रधारी सिंह के पहले ही किया गया था। सायद गढी के निर्माण के एकाध पीढ़ियो बाद किया गया हो यहा बडा एवं अलंकृत मंदिर है मंदिर के सामने कुछ खाली स्थान छोड कर बगीचे की तरह विकसित किया गया है मंदिर के गर्भगृह मे राम जानकी की मूर्तिया थी राम जानकी के सामने पूर्व दिषा मे एक दूसरे से जूडे छोटे.छोटे षिखरयुक्त तीन मंदिरनुमा कक्ष है जिसमे अन्य उपासक देव की मूर्तिया स्थापित है।

पंच मंदिर :– यह गढ़ी के दक्षिणीछोर पर नदी के किनारे स्थित है इस मंदिर पर राम सीता व बजरंग बली की मूर्तिया है। शिव मंदिर शिवराजपुर (नईगढी से लगभग 5.6 कि0मी0 दूर शिवराजपुर नामक एक छोटा सा गॉव है। गांव के मध्य में स्थित तालाब के पश्चिम किनारे पर यह शिवमंदिर बना हुआ है।

स्थापत्य विद्या की दृष्टि से यह मंदिर पंचायतन शैली का है जिसमें मुख्य गर्भगृह के चारो ओर एक–एक छोटे–छोटे गर्भगृह बने हुए है ये चौकोर बने है इनको देखने से एक छोटा मंदिर अलग से दिखता है इसमे दो ओर से द्वार है यह परिक्रमण पथ पर मुख्य गर्भगृह के वाहर चारो कोनो पर स्थित है। इन गर्भगृह के ऊपर चार चार स्तम्भो पर आधारित छतरी बनी है इन चारो गर्भगृह मे शिवलिंग प्रतिष्ठित है।

मुख्य गर्भगृह भी चौकोर है तथा इसमें चारो दिशाओ मे एक एक द्वार है। द्वार के सम्मुख स्तम्भो पर आधारित बराण्डा है मुख्य गर्भगृह क ऊपर प्रथम व दुतीय तृतीय मंजिल पर एक एक कक्ष बना हुआ जिनसे शिखर का निर्माण हुआ हशखर पिरामिड जैसी रचना का निर्माण हुआ प्रथम मंजिल मेब ने हुए कमरे के चार द्वार मे कलाकृतक आधारित छज्जे बने हुए है। दूसरी मंजिल यह अपेक्षा कृत छोटा है इसमे भी चार द्वार के सम्मुख दो–दो तोडो पर आधारित स्तम्भ झरोखे बने हुए है। झरोखे के ऊपर गुम्बद शिखर है। इसके बाद भी आगे की मंजिल में एक छोटा सा कमरा बना है इस तरह बाहर से एक शिखर बन गया। मुख्य गर्भगृह के शिखर का वाह्य भाग सप्तरथी है शिखर के ऊपर आमलक भी है। गर्भगृह मे वडे से शिवलिंग की स्थापना बने हुए जलहली में किया गया है। मंदिर के सामने एक बडा सा तालाब बना हुआ है तलाब मे मंदिर से नीचे तक सीढिया बनी हुई है। मंदिर के दोनो ओर उत्तर दक्षिण में पीपल के पेड उसी समय लगाए गए थे बहुत एकान्त पर बना यह मंदिर सुवह सूर्य की पूरी रोशनी मंदिर के अन्दर जाती है व यहा से डूवते सूर्य तक रोशनी अन्दर जाती है साथ बहुत रमणीय दिखाई देता है। इस मंदिर का निर्माण किससे कराया गया इस की कोई जानकारी नही शिवराजपुर नईगढी से 3.4 कि0मी0 दूर है यहा किसी गढी या रहायशी की जगह नही मिला है यहा के एकान्तता से स्पष्ट होता है कि यह पूजा ध्यान के लिये इस मंदिर का निर्माण नईगढी के इलाकेदार द्वारा 18वी. 19वी शताब्दी में किया गया।

इसके अतिरिक्त अन्य मंदिरो का समुह सेंगरान क्षेत्र में है जो ठाकुरो द्वारा व उनकी प्रजा द्वारा बनवाया गया था। जैसे महावीन पुर का मंदिर नईगढी (देवरी सेंगरान का बजरंगवली का मंदिर जिसकी जगह वर्तमान मे न था मंदिर बनाया गया है)

मऊ की गढी के स्थापत्य :– सेंगरो के सबसे महत्वपूर्ण प्रारम्भिक ठिकानो में मऊ मे कला (स्थापत्य) के महत्वपूर्ण स्त्रोत प्राप्त हुए है।

मऊ की गढी स्थापत्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है लेकिन यह आज पूर्णतः ध्वस्थ हो चुकी है कुछ दीवारे मंदिर के आवशेष खडे है दिवारी पर वेल पत्तिया उत्कीर्ण है गढी का द्वार पश्चिम दिशा की ओर था यह दो मंजिला इमारत थी द्वार के सामने दोनो ओर तो स्तम्भो के चबुतरे है यहा गढी के छज्जे बने हुए थे। गढी की दिवारे पत्थर के टुकडो वालू व वेल अलसी का तेल व चूना को मिला कर बनाया गया है गढी सलार नाले से बरगद के पेड़ तक गढी थी कहते है रानी गढी मे नहाकर गढी के अन्दर जाती थी गढी के दक्षिण दिशा में देवी को मंदिर बना हुआ है जहा कई कलात्मक शिलामुर्ति है जहा रानी द्वारा पूजा की जाती थी।

राम जानकी मंदिर :–गढी के सामने एक मंदिर है राम जानकी का जो उत्तर दिशा मे प्रवेश द्वार है। मंदिर के गर्भगृह के पहले बरामद है मंदिर के गर्भगृह मे राम जानकी की मूर्तिया है मंदिर के किनारे बजरंग वली की सिला मूर्ति है। मंदिर के बाहर अनेक कलापरक भूर्मिया है नर नारयण की दूसरी एक सिला पर गणेश जी की मूर्ति है एक मूर्ति चतर्भज आकृति की है वह स्त्री की मूर्ति वह सम्भवतः कोई देवी की पूजा के लिये स्थापित की गई है।
एक मूर्ति जो बडी है दसके साथ एक छोटी मूर्ति है वडी मूर्ति करधनी पहने हुए धड से अलग है शायद मॉ व वेटी की मूर्ति की वेटी की मूर्ति हो मंदिर के सामने किनारे तीन ओर से दीवारे है मंदिर के ऑगन मे तुलसी का चतूतरा है मुख्य द्वार के सिर्फ सामने है वाहरी दिवाल के नीचे सीढिया एक तालाब की ओर जाती है। मंदिर से उत्तर की तरफ एक तलाब है मंदिर से कमल के फूलो से खिला उसकी सुन्दरता देखने लायक है।

चित्रकला :– सेंगर क्षेत्र में वैसे पारम्परिक चित्रकला का इतना विकास नही हुआ था लेकिन लोक चित्रकला ने अपनी अलग पहचान बना रखी है। कुछ राजाओ के चित्र व दीवालो पर भगवान व जानवरो के चित्र मिलते है। यहॉ का कुम्हार गीली मिट्टी के वर्तन मे व बच्चो के खिलौने मे चित्र व सजावट करता था। स्त्रियाँ घर के दीवारो दरवाजो व खिडकियो के किनारे–किनारे विभिन्न फूल पत्तिया बेल बनाती थी तथा घर में ही कला परक मिट्टी के सामान बनाते थे। सेंगर क्षेत्र के घरो में काली मिट्टी का वर्तन जिस पर चित्रकारी कर मुडेर पर रखा जाता था। इसी प्रकार घर की दीवालो पर गोवर से चि़ बनाया जाता था। घर की दीवालो पर लाल महावर घेल कर चित्रकारी की जाती थी इसे लोक भाषा में कोहवर कहते है। गोदना की कला भी चित्रकारी का एक नयाब नमुना है यह समृति कल्पना और संघर्ष की कला है जिसमे जिजी विषा और टिकाऊपन का भाव निहित है। गोदना शरीर पर देवताओ के चित्र फूल पत्ती नक्त्र सूर्य की चित्रो की कला के रूप में गुदाया जाता है। बारीकियो से देखने पर सेंगर क्षेत्र की लोक चित्रकला आदिम कलाकारी को समेटी हुई नजर आती है। दिवालो पर बने चित्र व कोहवर प्राचीन चित्रकारी कीतरह विना किसी मिलावट के साधरण व सरल रूप में ठकेरे गए है।

लोक गायन व नृत्य :– सेंगर राज्य के इतिहास कला और संस्कृति को अभिव्यक्ति करने का सबसे सनल माध्यम लोक नृत्य या लोक गायन है। लोक गीतो में संस्कार गीत अधिक थे सोहर हुरी में यहा के लोक जीवन कला और संस्कृति का जीवंत वर्णन मिलता है। इनकी पृथक पहचान उन गीतो में है जिनमें वेदनचा करूणा और पीढा की अभिव्यक्ति अधिक है।
विशेष त्यौहारो अवसरो और व्रतो के गीत की पराम्परा ऋतुओ के अनुरूप चलती है फाल्गुन में होली फाग चैत मे देवी गीत श्रवण में कजली खजुलिया गीत गाए जाते थे।
देवी पूजा में भगत प्रसिद्ध है इसमे मैहर की सारदा देवी के गीत अधिक है इनमे जो प्रबन्धात्मक भगत है उनके नायक लंगूरा व धान है। देवताओ मे शंकर के प्रसिद्ध गीत है जिसे भोलदनिया कहते है। पराम्परागत प्राचीन बघेली गीतो में आदिवासियो के गीत करमा शैला दादर ठइगिता वप्पा दडरिया बनगिता सुआ विरहा मंन तंत्र जादू होने के टोटके के गीत हिंगाला नेनजूगाने के गीत है इनमें बघेली की पृथक पहचान है।
गुलामी और परतंत्रता की असहाय वेदना ने प्रसन्नता के अवसर पर भी दुख की एक झलक यहॉ दी है जो गीत कुछ स्वतंत्र है ये आदिवासी जातियो के है कोलहाई दादर कोटवरहाई चमरहाई दादर ऐसे ही गीत है जो जन्म पर गाए जाते है। उनमे यहा का लोकजीवन झाकता है जिसमें यहा की कला और संस्कृति समाहित है विवाह संस्कार पर बनरा विवाह सोहाग गारी सोहारी पर भी दादर और विदा के गीत गाए जाते है।

निष्कर्ष : समाजिक वर्ण व्यवस्था अर्थिक रूप से दो वर्गो मे बंटी थी उच्च व निम्न वर्ग। उच्च वर्ग राजा और उसके दरबरी, पबाईदारो एवं ब्राम्हणो का था जबकि निम्न वर्ग मे किसान मजदूर व निम्न वर्णी जातियां थी। निम्न वर्ग की स्थित शोचनिय थी, वे अछूत माने जाते थे। कृषको की गरीबी बढती जा रही थी समाज के मुट्टी भर उच्च वर्ग के द्वारा इनका शोषण किया जाता था। [7] यह समाज का बडा तबका अपनी अज्ञानता, अशिक्षा, अधिकारहीनता और गरीबी के कारण शोषित होने को मजबूर था। सेंगर राज्य का शासन प्रशासन वैसे तो मिताक्षरा पूरणो वा स्मृतियों के अनुसार चलता था किन्तु यहां की स्थानीय परिक्षिष्ट भी निर्धारित रही फिर चाहे प्रशासन की न्याय या राजस्व व्यवस्था हो। इसी प्रकार प्रचीनकाल से चली आ रही जातिगत व्यवस्था सामाजिक ढांचा और उससे जोडे तत्व इस केन्द्र में बने रहे। जाति व्यवस्था कि सामाजिक धार्मिक कठोरता जो 7वी शताब्दी में भारतीयों के प्रमुख विशेषता बनी रही।
कुछ नाजुक परिर्वतन जो सेंगर प्रशासन में हुआ जिसकी इलाका आज भी दूरस्थ गांव के आंचलो में दिखाई देता है चाहे दिवारो पर बनी लोककला या गहनो की नकासी या मिट्टी के बर्तनो की चित्रकारी हो आप देखेंगे की सेंगर क्षेत्र की वस्तुकला के प्रमाण आज भी अपने उपस्थिति दिलाने के लिए उपलब्ध है। धार्मिक व अवस्था के प्रतीक अनेक मंदिर मूर्तीया व पूज्यों की सामग्रीया अपनी पवित्र पहचान के लिये अव्यस्थित है। यहां की साहित्य वास्तुकला से कदम और आगे निकलकर इस क्षेत्र को राज्य की सीमा से बाहर एक नई पहचान दी। किसी भी युग के इतिहास निर्माण के लिए उस युग के साहित्य का अभी अपना ही महत्व होता है। इस साहित्य में भले ही राजनैतिक घटनाओं का आकलन हमेशा न किया जा सका हो फिर भी उस दौर के सामाजिक सांस्कृतिक इतिहास के लिये अति आवश्यक होता है।

सन्दर्भः

1. ठाकुर गोपाल शरण सिंह के विभिन्न प्रकाशित एवं अप्रकाशित ग्रंथ
2. गौरी शंकर द्विवेदी : बुन्देल वैभव भाग 1 व 2
3. यादवेन्द्र सिंह : रीवा राज्य का इतिहास
4. मौलवी रहमान अली : तबारीत ए बघेलखण्ड ऊर्दू (अप्रकाशित)
5. मुंशी श्यामलाल : तवारीख –ए–बुन्देलखण्ड (उर्दू)
6. अबुल फजल : अकबरनामा (अनु. बेवरिज)
7. रघुबर प्रसाद : रीवा राज्य का इतिहास